आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 5/अंक 1/मार्च 2025
Received: 22/3/2025; Published: 25/3/2025

कविता

मौन का मूल्य

प्रो. प्रतिभा मुदलियार

प्रो. प्रतिभा मुदलियार, **मौन का मूल्य**, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 5/अंक 1/मार्च 2025**,(48-49)
https://doi.org/10.5281/zenodo.15091590

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

अब भर पायी हूँ मैं

इन लोगों से—

कहने को बहुत कुछ है,

पर शब्द बेअसर से लगते हैं।

ओठ सी लिए हैं मैंने,

शेष है अब

सिर्फ़ चुप रहने का पर्याय।

कभी कहा भी था,

ग़ुस्से में, रोष में—

बेबाक, बेख़ौफ़।

पर बदले में पाया

सिर्फ़ अपनी ही आवाज़ की गूँज

और मन का टूटता संयम।

शायद,

मेरी माँग जायज़ नहीं थी,

या शायद

सुनने वाले बहरे थे।

जो भी हो—

अब शब्दों से नहीं,

सन्नाटे से संवाद करूँगी।

****